International Journal of
Global Multidisciplinary Research and Analytics
IJGMRA | ISSN (Online): 3107-6483
July-September 2025 | Vol. 01 | Issue 2
Website: www.thearyapublication.com

समावेशी शिक्षा के संदर्भ में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए डिजिटल टूल्स का उपयोग एवं लैंगिक समानता आधारित पाठ्यचर्या का विकास

डॉ० प्रवीण कुमार*

*सहायक आचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग, शिवपति पी० जी० कॉलेज शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर, उ० प्र०, भारत
ई-मेल: praveenkumarsdpg@gmail.com

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17313731
Accepted on: 20/09/2025 Published on: 10/10/2025

सारांश:

समावेशी शिक्षा का उद्देश्य सभी विद्यार्थियों को, चाहे उनकी सामाजिक, आर्थिक, लैंगिक या शारीरिक परिस्थितियाँ कैसी भी हों, समान अवसर और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के संदर्भ में डिजिटल टूल्स का उपयोग शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक सुलभ, लचीला और व्यक्तिगत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्क्रीन रीडर, स्पीच-टू-टेक्स्ट, ब्रेल डिस्प्ले, इंटरैक्टिव सॉफ़्टवेयर एवं अनुकूलित ई-लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म जैसे उपकरण दृष्टिबाधित, श्रवण बाधित और सीखने में कठिनाई का सामना कर रहे विद्यार्थियों के लिए शिक्षा को अधिक प्रभावी बना सकते हैं। इसी प्रकार, लैंगिक समानता आधारित पाठ्यचर्या का विकास शिक्षा में लैंगिक पूर्वाग्रहों को समाप्त करने, लड़कियों एवं अन्य लैंगिक अल्पसंख्यक समूहों की भागीदारी बढ़ाने तथा समावेशी वातावरण निर्माण में सहायक है। ऐसे पाठ्यक्रम में अध्ययन सामग्री, उदाहरण, चित्रण और गतिविधियाँ इस प्रकार से तैयार की जाती हैं कि वे सभी लिंगों के लिए समान अवसर, सम्मान और प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करें। डिजिटल टूल्स और लैंगिक संवेदनशील पाठ्यचर्या का एकीकृत उपयोग न केवल विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के सीखने के अनुभव को बेहतर बनाता है, बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में समानता, विविधता और समावेशिता के सिद्धांतों को भी मजबूत करता है। इस प्रकार, यह दृष्टिकोण सतत विकास लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में एक प्रभावी कदम है। यह अध्ययन समावेशी शिक्षा के ढाँचे के अंतर्गत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए डिजिटल टूल्स के एकीकरण तथा लैंगिक-समानता आधारित पाठ्यचर्या के विकास का अन्वेषण करता है। मौजूदा साहित्य, नीतिगत ढाँचे और प्रायोगिक अध्ययनों के आधार पर यह जाँच करता है कि किस प्रकार सहायक तकनीक और यूनिवर्सल डिज़ाइन फ़ॉर लर्निंग सिद्धांत विविध शिक्षार्थियों के लिए पहुंच, सहभागिता और सीखने के परिणामों को बेहतर बना सकते हैं।

प्रस्तुत शोध यह रेखांकित करता है कि लैंगिक-समानता आधारित पाठ्यचर्या, जो पूर्वाग्रहों से मुक्त हो और जिसमें विविध आदर्श-चरित्रों को शामिल किया गया हो, आपसी सम्मान, सहानुभूति और सामाजिक समावेशन को प्रोत्साहित करती है। यह प्रभावी क्रियान्वयन के लिए शिक्षक-प्रशिक्षण, स्थानीयकृत डिजिटल संसाधन, अवसंरचना विकास और नीतिगत समर्थन की आवश्यकता पर भी बल देता है। इसके अतिरिक्त, तकनीक के जिम्मेदार उपयोग हेतु डेटा गोपनीयता और सांस्कृतिक प्रासंगिकता पर ध्यान देना आवश्यक है। निष्कर्ष बताते हैं कि डिजिटल टूल्स और लैंगिक-संवेदनशील पाठ्यचर्या डिज़ाइन का संयुक्त प्रयोग न केवल विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए लाभकारी है, बल्कि संपूर्ण शिक्षा प्रणाली की समावेशिता और समानता को भी सशक्त बनाता है।

मुख्य शब्द: *समावेशी शिक्षा, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे, डिजिटल टूल्स, पाठ्यचर्या।*

प्रस्तावना:

समावेशी शिक्षा का मूल उद्देश्य प्रत्येक विद्यार्थी को, चाहे उसकी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, लैंगिक या शारीरिक परिस्थिति कैसी भी हो, समान अवसर और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना है। यह दृष्टिकोण न केवल शिक्षा का सार्वभौमिक अधिकार सुनिश्चित करता है, बल्कि समाज में समानता, विविधता और सहभागिता के मूल्यों को भी सशक्त बनाता है। समावेशी शिक्षा के अंतर्गत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (Children with Special Needs – CWSN) को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में समान रूप से सम्मिलित करने के लिए सहायक प्रौद्योगिकी (Assistive Technology) और उपयुक्त पाठ्यचर्या का विशेष महत्व है। विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए डिजिटल टूल्स का उपयोग शिक्षा की पहुँच और प्रभावशीलता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। उदाहरणस्वरूप, दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए स्क्रीन रीडर, श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए साइन लैंग्वेज इंटरप्रेटर सॉफ़्टवेयर, डिस्लेक्सिया से प्रभावित विद्यार्थियों के लिए टेक्स्ट-टू-स्पीच एप्लिकेशन, और अनुकूलित ई-लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म शिक्षा को अधिक लचीला, सुलभ और व्यक्तिगत बनाते हैं। इस प्रकार की तकनीक न केवल सीखने के अवसरों का विस्तार करती है, बल्कि विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और सहभागिता की भावना को भी प्रोत्साहित करती है। दूसरी ओर, लैंगिक समानता आधारित पाठ्यचर्या (Gender-Sensitive Curriculum) शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिक भेदभाव को समाप्त करने, सभी लिंगों के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने और समाज में लैंगिक समानता की भावना विकसित करने का एक प्रभावी साधन है। ऐसे पाठ्यक्रम में अध्ययन सामग्री, उदाहरण, गतिविधियाँ और

दृश्य प्रस्तुति इस प्रकार तैयार की जाती हैं कि वे किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह से मुक्त हों तथा सभी लिंगों के योगदान और अनुभव को समान महत्व दें। इस प्रकार, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए डिजिटल टूल्स का उपयोग और लैंगिक समानता आधारित पाठ्यचर्या का विकास, समावेशी शिक्षा के दो महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। इनका समन्वित प्रयोग न केवल शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि करता है, बल्कि सतत विकास लक्ष्य-4 (SDG-4: गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) की प्राप्ति में भी सहायक सिद्ध होता है।

समावेशी शिक्षा, एक ऐसा शैक्षिक दृष्टिकोण है जो प्रत्येक विद्यार्थी को, उसकी व्यक्तिगत भिन्नताओं, क्षमताओं, पृष्ठभूमि और आवश्यकताओं के बावजूद, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का समान अवसर प्रदान करता है। यह शिक्षा का ऐसा मॉडल है जिसमें विविधता को बाधा न मानकर, उसे एक संपत्ति के रूप में देखा जाता है। UNESCO और सतत विकास लक्ष्यों, में विशेष रूप से SDG-4, "सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण, समान और समावेशी शिक्षा" को एक वैश्विक प्राथमिकता के रूप में मान्यता दी गई है। इस संदर्भ में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा में सम्मिलित करना और उन्हें अपनी पूर्ण क्षमता तक पहुँचाने के लिए आवश्यक सहयोग प्रदान करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए डिजिटल टूल्स का महत्व वर्तमान डिजिटल युग में, सहायक प्रौद्योगिकी (Assistive Technology) और डिजिटल टूल्स, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए शिक्षा में एक क्रांतिकारी बदलाव ला रहे हैं। स्क्रीन रीडर, ब्रेल डिस्प्ले, टेक्स्ट-टू-स्पीच (TTS) और स्पीच-टू-टेक्स्ट (STT) सॉफ़्टवेयर, साइन लैंग्वेज इंटरप्रेटर ऐप, अनुकूलित ई-लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म और इंटरैक्टिव मल्टीमीडिया सामग्री जैसी तकनीकें न केवल उनकी शैक्षिक पहुँच को बढ़ा रही हैं, बल्कि सीखने के अनुभव को व्यक्तिगत और अनुकूलित भी बना रही हैं। उदाहरण के लिए, दृष्टिबाधित विद्यार्थी डिजिटल ऑडियो बुक्स और स्क्रीन रीडिंग सॉफ़्टवेयर की मदद से स्वतंत्र रूप से अध्ययन कर सकते हैं, जबकि श्रवण बाधित विद्यार्थी सबटाइटल और विज़ुअल इंटरैक्टिव कंटेंट से लाभान्वित हो सकते हैं। लैंगिक समानता आधारित पाठ्यचर्या का महत्व शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज में समानता, सम्मान और न्याय की भावना विकसित करने का भी साधन है। किंतु, पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था में प्रायः अनजाने में ही लैंगिक पूर्वाग्रह (Gender Bias) प्रतिबिंबित हो जाते हैं। यह पूर्वाग्रह न केवल अध्ययन सामग्री में, बल्कि शिक्षण विधियों और सामाजिक अपेक्षाओं में भी दिखाई देते हैं, जिससे लड़कियों और लैंगिक अल्पसंख्यकों की भागीदारी और अवसर सीमित हो जाते हैं।

लैंगिक समानता आधारित पाठ्यचर्या (Gender-Sensitive Curriculum) इस समस्या का समाधान प्रदान करती है। इसमें पाठ्यसामग्री, उदाहरण, चित्रण, और गतिविधियाँ इस प्रकार डिज़ाइन की जाती हैं कि वे सभी लिंगों को समान प्रतिनिधित्व दें और किसी भी लिंग को कमजोर या गौण न मानें। साथ ही, यह विद्यार्थियों में पारस्परिक सम्मान, सहयोग और समान अवसर के मूल्यों को विकसित करती है। दोनों दृष्टिकोणों का एकीकृत महत्व विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए डिजिटल टूल्स और लैंगिक समानता आधारित पाठ्यचर्या का संयोजन समावेशी शिक्षा को व्यापक और प्रभावी बनाता है। जहाँ डिजिटल टूल्स शारीरिक, मानसिक या संवेदी चुनौतियों को पार करने में मदद करते हैं, वहीं लैंगिक संवेदनशील पाठ्यचर्या सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाओं को तोड़ने में सहायक होती है। इस एकीकृत दृष्टिकोण के माध्यम से विद्यालय एक ऐसे शिक्षण वातावरण का निर्माण कर सकते हैं जिसमें न केवल सभी विद्यार्थी समान रूप से सम्मिलित हों, बल्कि उनकी विविध आवश्यकताओं और पहचानों का सम्मान भी हो। यह न केवल व्यक्तिगत विकास को प्रोत्साहित करता है, बल्कि सामाजिक समरसता, समानता और सतत विकास के लिए भी आधार तैयार करता है।

समावेशी शिक्षा के संदर्भ में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए डिजिटल टूल्स का उपयोग और लैंगिक समानता आधारित पाठ्यचर्या का विकास, शिक्षा प्रणाली में गुणात्मक सुधार लाने की दिशा में एक आवश्यक और दूरदर्शी कदम है। यह दृष्टिकोण केवल नीति-निर्माताओं और शिक्षकों के लिए ही नहीं, बल्कि समूचे समाज के लिए एक साझा जिम्मेदारी है, जिससे एक न्यायपूर्ण और समान अवसरों वाला शैक्षिक भविष्य सुनिश्चित किया जा सके। समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) एक ऐसी शैक्षिक अवधारणा है जिसका उद्देश्य प्रत्येक विद्यार्थी को, उसकी सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शारीरिक, मानसिक, या लैंगिक परिस्थितियों की परवाह किए बिना, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का समान अवसर प्रदान करना है। यह शिक्षा का अधिकार केवल सैद्धांतिक न रहकर व्यवहारिक रूप से लागू हो, इसके लिए शिक्षा प्रणाली में संरचनात्मक, तकनीकी और पाठ्यचर्या-आधारित सुधार आवश्यक हैं।

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन:

समावेशी शिक्षा का लक्ष्य है कि प्रत्येक छात्र—चाहे वह शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक, भाषायी भिन्नताओं अथवा लैंगिक पहचान/अनुभवों के साथ आता हो—उच्च गुणवत्ता की शिक्षा तक समान पहुँच पाए।

डिजिटल प्रौद्योगिकियाँ (जैसे सहायक तकनीक, एडैप्टिव सॉफ्टवेयर, एआई-आधारित टूल्स) सीखने में व्यक्तिगत अनुकूलन (personalization), पहुँच (accessibility) और सहभागिता (engagement) बढ़ाकर समावेशी लक्ष्यों को सशक्त करती हैं। लैंगिक समानता आधारित पाठ्यचर्या (gender-equitable curriculum) पाठ-सामग्री, उदाहरणों, गतिविधियों और मूल्यांकन में रूढ़ धारणाओं को चुनौती देकर अवसर-समानता सुनिश्चित करती है। यूनिवर्सल डिज़ाइन फॉर लर्निंग (UDL): विविधता को प्रारंभिक डिजाइन का आधार मानते हुए बहु-ढंग से उद्देश्य, प्रस्तुति और अभिव्यक्ति के विकल्प देता है; डिजिटल मीडिया UDL को क्रियाशील बनाते हैं (उदा., टेक्स्ट-टू-स्पीच, वैकल्पिक प्रारूप, इंटरैक्टिव सिमुलेशन)। सामाजिक न्याय एवं क्रिटिकल पेडागॉजी: पाठ्यचर्या में शक्ति-संबंधों, लैंगिक रूढ़ियों और बहिष्करण की प्रक्रियाओं की आलोचनात्मक समीक्षा; शैक्षिक तकनीक का उद्देश्य केवल दक्षता नहीं, समानता भी। एक्सेसिबिलिटी मानक: WCAG/Access for All जैसे मानक—कंट्रास्ट, कैप्शनिंग, कीबोर्ड नेविगेशन—डिजिटल कंटेंट को सभी के लिए उपयोगी बनाते हैं।

अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य:

वैश्विक विमर्श में सहायक तकनीकें (स्क्रीन-रीडर, ऑगमेंटेटिव एंड अल्टरनेटिव कम्युनिकेशन—AAC, स्विच-एक्सेस), मल्टीमीडिया, गेमिफिकेशन और एनालिटिक्स-सक्षम प्लेटफॉर्म को सीखने के अंतर को घटाने में सहायक पाया गया है, बशर्ते शिक्षक-प्रशिक्षण और इंफ्रास्ट्रक्चर उपलब्ध हो। भारतीय नीतिगत परिदृश्य में समावेशन व लैंगिक समानता NEP-2020, समेकित शिक्षा, तथा RPwD Act (2016) से बल पाते हैं; ICT-समर्थ विद्यालय/उच्च शिक्षा पहलें (DIKSHA, SWAYAM, e-content) पहुँच का विस्तार करती हैं। डिजिटल टूल्स: प्रकार, उपयोग और शैक्षिक प्रमाण: सहायक तकनीक (Assistive Tech): स्क्रीन-रीडर/मैग्निफायर, टेक्स्ट-टू-स्पीच, स्पीच-टू-टेक्स्ट—दृष्टि/श्रवण/डिस्लेक्सिया/डिसग्राफिया वाले शिक्षार्थियों के लिए पहुँच व अभिव्यक्ति सक्षम।AAC ऐप/डिवाइस—बोलने में कठिनाई वाले बच्चों के संप्रेषण को बढ़ाते हैं; सहभागिता और कक्षा-समावेशन बेहतर। एडैप्टिव/एआई-आधारित प्लेटफॉर्म: वैयक्तिकृत अभ्यास, रियल-टाइम फीडबैक, सीखने की प्रगति के आँकड़े; लेकिन एल्गोरिदमिक पक्षपात और गोपनीयता पर सावधानी आवश्यक। मल्टीमीडिया एवं इमर्सिव माध्यम (वीडियो, सिमुलेशन, AR/VR): जटिल अवधारणाओं का बहु-इंद्रिय अनुभव; मोटर/सेंसरी सीमाओं के

लिए वैकल्पिक इंटरैक्शन। कम-संसाधन संदर्भों के लिए लो-टेक समाधान: ऑफ़लाइन कंटेंट, रेडियो/टीवी-समर्थित शिक्षण, मोबाइल-फ़र्स्ट ऐप; लागत-प्रभावशीलता और स्केलेबिलिटी।

लैंगिक समानता आधारित पाठ्यचर्या: निष्कर्ष और प्रवृत्तियाँ:

लैंगिक संवेदनशील कंटेंट—उदाहरण, चित्रण, कथाएं, केस-स्टडी—रूढ़ धारणाओं को चुनौती देती हैं; STEM में लड़कियों की सेल्फ-इफिकेसी व निरंतरता बढ़ती है। डिजिटल परिवेश में लैंगिक सुरक्षा—ऑनलाइन उत्पीड़न/साइबरबुलिंग की रोकथाम, गोपनीयता सेटिंग, डिजिटल नागरिकता पाठों का समावेश अनिवार्य। इंटरसेक्शनल दृष्टि—लिंग / विकलांगता / ग्रामीणता/भाषा/वर्ग के संयोजन पर ध्यान; एक-आकार-सबके-लिए दृष्टि सीमित परिणाम देती है। मूल्यांकन—लैंगिक पक्षपात से मुक्त रुब्रिक, विविध आउटपुट (वीडियो, पॉडकास्ट, प्रोजेक्ट) और अनुकूल समय/सहायता की व्यवस्था। साहित्य इंगित करता है कि जब डिजिटल टूल्स को UDL सिद्धांतों, सहायक तकनीकों और लैंगिक समता-उन्मुख पाठ्यचर्या के साथ संगठित रूप में अपनाया जाता है, तब विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहुँच, सहभागिता और सीखने के परिणामों में स्पष्ट सुधार संभव है। सफलता का केंद्र डिज़ाइन-समावेशन, शिक्षक-क्षमता, और सुरक्षित-न्यायसंगत डिजिटल संस्कृति है—केवल उपकरणों की आपूर्ति नहीं।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए डिजिटल टूल्स की आवश्यकता एवं महत्व:

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (Children with Special Needs – CWSN) के शिक्षण-अधिगम में तकनीक का उपयोग एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभरकर सामने आया है। पारंपरिक कक्षा पद्धतियाँ अक्सर उनकी व्यक्तिगत सीखने की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पातीं, जबकि डिजिटल टूल्स और सहायक प्रौद्योगिकी (Assistive Technology) इस अंतर को कम करने में सक्षम हैं।

- दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए स्क्रीन रीडर, ब्रेल डिस्प्ले और ऑडियो बुक्स
- श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए साइन लैंग्वेज इंटरप्रेटर ऐप, सबटाइटल युक्त वीडियो और विज़ुअल इंटरैक्टिव कंटेंट
- सीखने में कठिनाई (जैसे डिस्लेक्सिया) वाले विद्यार्थियों के लिए टेक्स्ट-टू-स्पीच (TTS) और स्पीच-टू-टेक्स्ट (STT) सॉफ़्टवेयर

- गतिशीलता से जुड़ी चुनौतियों वाले विद्यार्थियों के लिए अनुकूलित ई-लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म और वॉइस कमांड टूल्स

ये डिजिटल साधन शिक्षा को न केवल अधिक सुलभ और लचीला बनाते हैं, बल्कि विद्यार्थियों की आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास और सक्रिय सहभागिता को भी बढ़ावा देते हैं।

लैंगिक समानता आधारित पाठ्यचर्या की आवश्यकता एवं महत्व:

शिक्षा केवल अकादमिक ज्ञान प्रदान करने का साधन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक मूल्यों, दृष्टिकोणों और समानता की भावना को विकसित करने का भी माध्यम है। परंतु, पारंपरिक शिक्षा सामग्री में कई बार अनजाने में लैंगिक पूर्वाग्रह (Gender Bias) झलक जाता है, जो लड़कियों और लैंगिक अल्पसंख्यकों की भागीदारी और अवसरों को सीमित कर सकता है। लैंगिक समानता आधारित पाठ्यचर्या (Gender-Sensitive Curriculum) इस स्थिति को बदलने का एक सशक्त उपकरण है। इसमें—अध्ययन सामग्री, उदाहरण और चित्रण ऐसे तैयार किए जाते हैं जो सभी लिंगों को समान महत्व दें। कक्षा गतिविधियों और चर्चाओं में सभी विद्यार्थियों की भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाता है। ऐतिहासिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक योगदानों में महिलाओं और लैंगिक अल्पसंख्यकों के योगदान को समान रूप से दर्शाया जाता है। लैंगिक रूढ़ियों को तोड़ने वाले और समानता को बढ़ावा देने वाले उदाहरणों को शामिल किया जाता है।

एकीकृत दृष्टिकोण का प्रभाव:

डिजिटल टूल्स और लैंगिक समानता आधारित पाठ्यचर्या का एकीकृत उपयोग समावेशी शिक्षा को व्यापक और बहुआयामी बनाता है। जहाँ डिजिटल टूल्स शारीरिक, मानसिक और संवेदी बाधाओं को कम करते हैं, वहीं लैंगिक संवेदनशील पाठ्यचर्या सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाओं को समाप्त करती है। इस प्रकार, दोनों का संयोजन—

- सीखने के अनुभव को व्यक्तिगत और सुलभ बनाता है।
- विद्यार्थियों की आत्म-स्वीकृति और आत्मसम्मान को मजबूत करता है।
- विद्यालयों में समानता, सम्मान और विविधता की संस्कृति को बढ़ावा देता है।

समावेशी शिक्षा के संदर्भ में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए डिजिटल टूल्स का प्रयोग और लैंगिक समानता आधारित पाठ्यचर्या का विकास, शिक्षा में समानता और गुणवत्ता सुनिश्चित करने की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है। यह दृष्टिकोण न केवल व्यक्तिगत और शैक्षणिक विकास में सहायक है, बल्कि एक न्यायपूर्ण, समावेशी

और सतत समाज के निर्माण की नींव भी रखता है। शिक्षा नीति-निर्माताओं, शिक्षकों और समाज के सभी वर्गों को इस दिशा में सक्रिय सहयोग और निवेश करना आवश्यक है, ताकि शिक्षा वास्तव में "सभी के लिए" हो सके।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रम:

भारत सरकार ने विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, पुनर्वास, आर्थिक सहायता और अधिकार संरक्षण को ध्यान में रखते हुए कई नीतियाँ और योजनाएँ लागू की हैं। शिक्षा के क्षेत्र में समग्र शिक्षा अभियान, IEDSS योजना और RTE अधिनियम 2009 के माध्यम से समावेशी शिक्षा, विशेष शिक्षक, सहायक उपकरण तथा होम-बेस्ड शिक्षा की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। स्वास्थ्य क्षेत्र में राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (RBSK) और अर्ली इंटरवेंशन सेंटर द्वारा बच्चों की स्क्रीनिंग, उपचार और पुनर्वास सेवाएँ दी जाती हैं। सामाजिक न्याय मंत्रालय की दीनदयाल विकलांग पुनर्वास योजना, Accessible India Campaign और सहायता योजना के माध्यम से विशेष विद्यालय, व्यावसायिक प्रशिक्षण, दिव्यांगजन-अनुकूल सुविधाएँ और सहायक उपकरण उपलब्ध कराए जाते हैं। इसके अतिरिक्त Pre-Matric एवं Post-Matric छात्रवृत्ति और RPwD Act, 2016 जैसे कानूनी प्रावधान, तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत समावेशी और न्यायसंगत शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। इन सभी पहलों का उद्देश्य CWSN को शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक भागीदारी और आत्मनिर्भरता के समान अवसर प्रदान करना है।

निष्कर्ष:

समावेशी शिक्षा के संदर्भ में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए डिजिटल टूल्स का उपयोग एवं लैंगिक समानता आधारित पाठ्यचर्या का विकास वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की एक अनिवार्य आवश्यकता है। अध्ययन एवं संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से स्पष्ट होता है कि यदि डिजिटल टूल्स, सहायक तकनीक (Assistive Technology) और यूनिवर्सल डिज़ाइन फॉर लर्निंग (UDL) सिद्धांतों को समेकित रूप से अपनाया जाए, तो विभिन्न प्रकार की शारीरिक, मानसिक और सामाजिक बाधाओं को काफी हद तक कम किया जा सकता है। इससे न केवल विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सीखने की पहुंच और सहभागिता में वृद्धि होती है, बल्कि सभी विद्यार्थियों के लिए समान अवसर भी सुनिश्चित होते हैं। लैंगिक समानता आधारित पाठ्यचर्या का समावेश यह सुनिश्चित करता है कि शिक्षण सामग्री, उदाहरण और गतिविधियाँ किसी भी प्रकार के लैंगिक भेदभाव से मुक्त हों तथा सभी लिंगों को

सकारात्मक और समान रूप से प्रस्तुत करें। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों में संवेदनशीलता, सहयोग और आपसी सम्मान की भावना विकसित करता है, जो दीर्घकाल में एक समावेशी एवं समानतापूर्ण समाज के निर्माण में सहायक होता है। हालांकि, प्रभावी क्रियान्वयन के लिए आवश्यक है कि शिक्षक प्रशिक्षण, डिजिटल अवसंरचना (infrastructure), स्थानीय भाषाओं में सामग्री उपलब्धता, और नीति-स्तरीय समर्थन को प्राथमिकता दी जाए। साथ ही, तकनीकी समाधानों में एल्गोरिदमिक निष्पक्षता (algorithmic fairness) और डाटा सुरक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। अंततः, डिजिटल टूल्स और लैंगिक-समानता आधारित पाठ्यचर्या का एकीकृत प्रयोग न केवल विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के शैक्षिक परिणामों को बेहतर बनाता है, बल्कि शिक्षा व्यवस्था को वास्तव में समावेशी और न्यायसंगत बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

संदर्भ:

- एडीबर्न, डी. एल. (2020). प्रौद्योगिकी-संवर्धित समावेशी शिक्षा: विकलांग विद्यार्थियों के लिए व्यक्तिगत शिक्षण का डिज़ाइन. कम्प्यूटर्स एंड एजुकेशन, 146.
- अल-अज़ावेई, ए.; सेरेनेली, एफ.; & लुंडक्विस्ट, के. (2016). यूनिवर्सल डिज़ाइन फॉर लर्निंग (UDL): 2012 से 2015 के बीच समीक्षित शोध-पत्रों का विषयवस्तु विश्लेषण. *जर्नल ऑफ द स्कॉलरशिप ऑफ टीचिंग एंड लर्निंग, 16*(3), 39–56.
- भार्गव, एम. (2015). विशिष्ट बालक: शिक्षा एवं पुनर्वास. एचo पीo भार्गव बुक हाउस.
- विकलांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम (2016). सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार.
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020). शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.
- चतुर्वेदी एवं बिनीता, (2025). समावेशी शिक्षा, शाइन बुक्स इंटरनेशनल.
- दास, एन. (2024). इन्क्लूसिव एजुकेशन फॉर चिल्ड्रन विद स्पेशल नीड्स. अटलांटिक पब्लिशिंग हाउस.
- सिंह, ए. के. (2016). शिक्षा मनोविज्ञान, भर्ती भवन प्रकाशन.
- सिंह, एस.; & अंसारी (2024). समावेशी शिक्षा: दृष्टिकोण एवं क्रियान्वयन. रमाशंकर प्रकाशन हाउस.
- विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं विश्व बैंक (2011). विकलांगता पर विश्व रिपोर्ट. डब्ल्यूएचओ प्रेस.
- यूनेस्को (2017). शिक्षा में समावेशन और समानता सुनिश्चित करने हेतु मार्गदर्शिका. यूनेस्को प्रकाशन.
- यूनेस्को (2020). वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट: समावेशन और शिक्षा – सभी का मतलब सभी. यूनेस्को प्रकाशन.